❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा विभेर्न मरिष्यसि।।
- अथर्व. 5/30/8
हे आत्मन्! डर मत, तू मरेगा नहीं।
O soul! be not araid ! you will not die.

वर्ष 42, अंक 33 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 8 जुलाई, 2019 से रविवार 14 जुलाई, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

प्रतिभा आपकी-सहयोग हमारा : महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान द्वारा

राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभावान विद्यार्थियों को यू.पी.एस.सी. की तैयारी हेतु विशेष सहयोग

साक्षात्कार, ग्रुप डिस्कशन एवं लिखित परीक्षा के बाद चयनित परीक्षार्थियों को दिया जाएगा प्रशिक्षण

मानव सेवा को बनाएं जीवन का मुख्य उद्देश्य
- पद्मभूषण महाशय धर्मपाल

सारे देश में विभिन्न केन्द्रों से संचालित करेंगे यह योजना
- सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

चयन प्रक्रिया में सहयोगी समस्त अधिकारियों एवं कार्यकर्ता महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद एवं आभार - धर्मपाल आर्य

राष्ट्र सेवा एवं मानव निर्माण के क्षेत्र में सदैव तत्पर रहने वाले आर्य समाज ने एक विशेष पहल की है जिसमें राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभावान विद्यार्थियों को उच्च प्रशासनिक सेवाओं हेतु नि:शुल्क विशेष प्रशिक्षण, आवास एवं भोजन आदि की व्यवस्था का बीड़ा उठाया है। आर्य समाज का मानना है कि देश की संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों का संरक्षण एवं संवर्धन करना है तो देश की प्रतिभावान युवा पीढ़ी को सुदिशा प्रदान करनी ही होगी। इसलिए महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान ने पूरे भारत से प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को उनकी उन्नति, प्रगति और सफलता के उच्च शिखर तक पहुंचाने हेतु आर्यसमाज की युवा शक्ति को अग्रिम पंक्ति में लाने के अभियान का शुभारम्भ किया है। संस्थान द्वारा कई महीनों के प्रचार-प्रसार के परिणामस्वरूप लगभग 2500 छात्र-छात्राओं ने संस्थान को अपना आवेदन भेजा। इन सभी विद्यार्थियों में से उनकी योग्यता का निरीक्षण करते हुए 174 बच्चों को लिखित परीक्षा हेतु सुयोग्य पाया गया और सभी की विधिवत लिखित

- शेष पृष्ठ 5 पर

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के उद्देश्यों की जानकारी देते दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं मंचस्थ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी तथा उपस्थित प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को आशीर्वाद देते पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी।

चयन प्रक्रिया के अवसर पर विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए सम्मानित अधिकारीगण एवं महाशय जी के साथ सामूहिक चित्र में विद्यार्थीगण, अधिकारी एवं कार्यकर्ता।

पूर्वोत्तर भारत - असम के बोकाजान क्षेत्र में आर्यसमाज के विभिन्न शिक्षा केन्द्रों के विद्यार्थियों हेतु

योग, चरित्र निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

प्रत्येक वर्ष हर आश्रम में लगेंगे आर्य वीर दल एवं आर्य वीरांगना दल के प्रशिक्षण शिविर - जोगेन्द्र खट्टर

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के तत्वाधान में आर्यसमाज एवं आर्य वीर दल द्वारा बोकाजान, कार्बी आंग्लांग में दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित छात्रावास दीमापुर (नागालैंड) जयराजान, डिफु, बोकाजान तथा पृथ्वीराज शास्त्री छात्रावास, धनश्री और प्रेमसुधा दयानंद आर्य विद्या निकेतन आदि पूर्वोत्तर भारत में गतिशील शिक्षण संस्थाओं के लगभग 200 से ज्यादा बालका बालिकाओं कों शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक स्तर पर सफल बनाने हेतु तथा उनके जीवन के

- शेष पृष्ठ 4 पर

वेद-स्वाध्याय

परम सत्य की प्राप्ति के लिए

कथं वातो नेलयति कथं न रमते मनः।
किमापः सत्यं प्रेप्सन्तीर्नेलयन्ति कदा चन।। - *अथर्व० 10/7/37*
ऋषिः **अथर्वा।।** देवता - **स्कम्भ आत्मा वा।।** छन्दः **अनुष्टुप्।।**

शब्दार्थ - वातः = वायु, प्राण **कथम्** = क्यों **न इलयति** = नहीं ठहरता? **मनः** = मन **कथम्** = क्यों **न रमते** = कहीं नहीं रमता? **किम्** = क्या **सत्यं प्रेप्सन्तीः** = सत्यस्वरूप को प्राप्त करना चाहती हुई ही **आपः** = प्रजाएँ, जीव, जीवों के कर्मप्रवाह **कदाचन** = कभी भी **न इलयन्ति** = नहीं ठहरते हैं, सदा चल रहे हैं?

विनय - यह वायु क्यों सदा गति कर रहा है? कहीं ठहर क्यों नहीं जाता? यह मन क्यों कहीं रत नहीं हो जाता? क्यों किसी आनन्द को पाकर ठहर नहीं जाता? ये नदियाँ, ये प्रजाएँ, ये जीव, जीवों के ये कर्मप्रवाह क्यों कभी नहीं ठहरते? क्यों सदा चल रहे हैं?

ये सब किसे प्राप्त करना चाहते हुए चलते चले जा रहे हैं? यह वायु, यह प्राण कहाँ पहुँचने के लिए सदा चल रहा है? यह मन किस प्यारे को पाना चाहता हुआ और उसे कहीं न पाता हुआ प्रतिक्षण चंचल है? ये सब प्रजाएँ, ये सब प्राणी दिन-रात कुछ-न-कुछ करते हुए किसे प्राप्त करना चाहते हैं?

क्या ये सब सत्य को ही पाना चाहते हुए नहीं चल रहे हैं? ओह! सचमुच, उस परम सत्य को पाने के लिए ही प्राण निरन्तर चल रहा है, मन सदा भटक रहा है और सब प्राणियों का प्रतिक्षण का कर्मप्रवाह चल रहा है और निःसन्देह कभी, किसी काल में उस परम प्यारे 'सत्य' को पा लेने पर ही यह हमारा प्राण चैन पाएगा, मन निरुद्ध हो जाएगा, हमारी सब-की-सब चेष्टाएँ सर्वथा बन्द हो जाएँगी और हम उस प्रेप्सित परम आनन्द में समाधिस्थ हो जाएँगे, पर उसे बिना पाये कहीं विश्राम नहीं है, हे भाइयो! कहीं विश्राम नहीं है।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

हिन्दुओं के पलायन की बढ़ती घटनाओं पर विशेष

पलायन की सच्चाई के निकट जाना होगा

कैराना के बाद अब इसी उत्तर प्रदेश का मेरठ शहर का प्रहलाद नगर भी अखबारों की सुर्खियों में है। वजह यहां से भी बड़ी तादाद में हिंदू परिवारों के पलायन का मुद्दा जोर पकड़ता जा रहा है। सन 1947 में देश की आजादी के दौरान बंटवारे के बाद मेरठ की प्रहलादनगर कॉलोनी शरणार्थी कॉलोनी के रूप में बसाई गई थी। लेकिन आज 70 साल बाद एक बार फिर लोगों को यहां से जाने के हालात पैदा हो रहे हैं। यहाँ से भी पलायन करने का वही कारण है जो पाकिस्तान, बांग्लादेश और कश्मीर में रहा था। आए दिन मोहल्ले की महिलाओं, बेटियों से छेड़खानी की घटनाएं आम बात होना, गलियों में मुस्लिम समुदाय के लड़के बेखौफ आए दिन बाइकों पर गलियों मे चक्कर लगाना और सबको परेशान करना एक आम बात है। मेरठ के इस मुहल्लेवासियों का आरोप है, युवतियों पर फब्तियां कसना और मारपीट करना इन युवकों का शगल बन चुका है। इन सभी बातों और वारदातों से परेशान होकर इन्होंने अपना यहां का घर बेच दिया और परिवार सहित मेरठ के किसी दूसरे मुहल्ले में जाकर बस गए। यह सिर्फ प्रह्लाद नगर में ही नहीं बल्कि इस मोहल्ले से सटी दूसरी कालोनियां जैसे कि स्टेट बैंक कॉलोनी, राम नगर, हरिनगर, ईश्वरपुरी, विकासपुरी जैसे दर्जनों मोहल्ले ऐसे हैं जो एक खास समुदाय के लोगों के कब्जे में आ चुके हैं और हिंदू परिवारों का पलायन हो चुका है।

कुछ समय पहले दिल्ली के सराय रोहिल्ला में स्थित तुलसीनगर और दिल्ली के नॉर्थ ईस्ट क्षेत्र में स्थित ब्रह्मपुरी इलाके से लोगों के पलायन की खबरें आई थीं। यहां भी लोगों ने अपने घरों के बाहर यह मकान बिकाऊ है, लिखना शुरू कर दिया था। यही नहीं इस समय देश में कम से कम 17 राज्य है, जहां से हिंदुओं को अपनी जन्मभूमि वाले स्थानों को छोड़ने के लिए मजबूर किया जा रहा है। यह एक किस्म से जमीन जिहाद है, यानि हिन्दुओं के मोहल्लों में ऐसी हरकतें की जायें ताकि वह अपनी जमीन ओने पौने दामों में बेचकर दूसरी जगह चले जाएँ! जम्मू कश्मीर, हरियाणा का मेवात, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड के कई इलाके, बिहार, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, बिहार, असम, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल, गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक के अनेकों जिलों में हिंदुओं को पलायन के लिए मजबूर करने के अलावा उनकी लड़कियों को अपमानित किया जा रहा है, उनकी जमीन जबरन कब्जाई जा रही है, मंदिरों पर हमले हो रहे हैं, उन्हें अपने त्योहारों को नहीं मनाने दिया जाता है।

एक समय कश्मीरी पंडितों को रातों रात अपने घरों को छोड़कर भागना पड़ा था। पाकिस्तान से जिया-उल-हक की तानाशाही से लेकर तालिबान के अत्याचारों तक पाकिस्तानी हिन्दुओं का जीवन दूभर ही रहा है। आजादी के वक्त पाकिस्तान में कुल 428 मंदिर थे, जिनमें से अब सिर्फ 26 हो बचे हैं। मानवाधिकार आयोग की वर्ष 2012 की रिपोर्ट के मुताबिक पाकिस्तान के सिंध प्रान्त में हर महीने 20 से 25 हिन्दू लड़कियों का अपहरण होता है और जबरदस्ती धर्म परिवर्तन कराया जाता है। इसी तरह अब भारत में भी हिन्दू जाति कई क्षेत्रों में अपना अस्तित्व बचाने में लगी हुई है। इसके कई कारण हैं, इस सच से हिन्दू सदियों से ही मुंह चुराता रहा है जिसके परिणाम समय-समय पर देखने को भी मिलते रहे हैं। इस समस्या के प्रति शुतुर्गमुर्ग बनी भारत की राजनीति निश्चित ही हिन्दुओं के लिए घातक ही सिद्ध हो रही है। पिछले 70 साल में हिन्दू अपने ही देश भारत के 8 राज्यों में अल्पसंख्यक हो चला है।

कश्मीर में हिन्दुओं पर हमलों का सिलसिला 1989 में जिहाद के लिए गठित संगठनों ने शुरू किया था जिनका नारा था- 'तुम भागो या मरो' इसके बाद कश्मीरी पंडितों ने घाटी छोड़ दी। करोड़ों के मालिक कश्मीरी पंडित अपनी पुश्तैनी जमीन-जायदाद छोड़कर शरणार्थी शिविरों में रहने को मजबूर हो गए। असम कभी 100 प्रतिशत हिन्दू बहुल राज्य हुआ करता था किन्तु आज असम के 27 जिलों में से 9 मुस्लिम बहुल आबादी वाले जिले बन चुके हैं, जहां आतंक का राज कायम है पिछले चार दशक से जारी घुसपैठ के दौरान बंगलादेशी घुसपैठियों ने वहां बोडो हिन्दुओं की खेती की 73 फीसदी जमीन पर कब्जा कर लिया। अब बोडो के पास सिर्फ 27 फीसदी जमीन है। सरकार ने वोट की राजनीति के चलते कभी भी इस

..... यहां भी लोगों ने अपने घरों के बाहर 'यह मकान बिकाऊ है' लिखना शुरू कर दिया था। यही नहीं इस समय देश में कम से कम 17 राज्य हैं, जहां से हिंदुओं को अपनी जन्मभूमि वाले स्थानों को छोड़ने के लिए मजबूर किया जा रहा है। यह एक किस्म से जमीन जिहाद है, यानि हिन्दुओं के मोहल्लों में ऐसी हरकतें की जायें ताकि वह अपनी जमीन ओने पौने दामों में बेचकर दूसरी जगह चले जाएँ! जम्मू कश्मीर, हरियाणा का मेवात, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड के कई इलाके, बिहार, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, बिहार, असम, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल, गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक के अनेकों जिलों में हिंदुओं को पलायन के लिए मजबूर करने के अलावा उनकी लड़कियों को अपमानित किया जा रहा है, उनकी जमीन जबरन कब्जाई जा रही है, मंदिरों पर हमले हो रहे हैं, उन्हें अपने त्योहारों को नहीं मनाने दिया जाता है।.....

सामाजिक बदलाव पर ध्यान नहीं दिया इसी कारण असम के लोग अब अपनी ही धरती पर शरणार्थी बन गए हैं।

वोट की राजनीति के चलते राजनीतिक दलों ने बांग्लादेशी घुसपैठियों को असम, उत्तर पूर्वांचल और भारत के अन्य राज्यों में बसने दिया। राजनीति के कारण ही बंगाल के कई इलाके मुस्लिम बहुल हो चुके हैं और हिंदुओं का इन इलाकों में जीना भी दूभर हो गया है। राज्य में अवैध रूप से रहने वाले बांग्लादेशी घुसपैठियों की संख्या एक करोड़ से भी ज्यादा हो चुकी है। अवैध घुसपैठ ने राज्य की जनसंख्या का समीकरण बदलकर रख दिया है। उन्हें सियासत के चक्कर में देश में वोटर कार्ड, राशन कार्ड जैसी सुविधाएं मुहैया करवा दी जाती हैं और इसी आधार पर वे देश की आबादी से जुड़ जाते हैं और कुछ दिन बाद दूसरे समुदाय की महिलाओं और जमीन पर कब्जे की कोशिश शुरू कर देते हैं। बंगाल से केरल तक अनेकों खबरें अखबारों से लेकर मीडिया में शोर सुनते आ रहे हैं।

जम्मू बंगाल और केरल की बात बहुत दूर की है। आज हालात ये हो गये हैं कि विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की राजधानी में लोगों को असुरक्षा के कारण पलायन करना पड़े, उनके सामने दुर्गा, शिव, राम, हनुमान समेत अन्य हिन्दू देवी देवताओं की झांकियों वाले मंदिर में तोड़फोड़ कर दी जाये। लेकिन इसके बावजूद लुटियंस मीडिया को अब तक दिल्ली में रहने वाले हिंदुओं की पीड़ा नजर नहीं आई। ये वही मीडिया है जो सीरिया और बांग्लादेश के लोगों के पलायन करने पर खूब मातम मनाती हैं रोहिंग्या को लेकर रोती दिखती है लेकिन जब देश की राजधानी के आसपास हिंदू पलायन करने पर मजबूर हैं तो उसने चुप्पी साध रखी है। सवाल पलायनवादी हिन्दुओं से भी है कि कब तक, कहाँ तक पलायन करेंगे? - ***सम्पादक***

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र

सत्य की राह Vedic Path to Absolute Truth

मात्र 30/- रु. हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध

प्राप्ति स्थान : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. नं. 9540040339

क्या जीसस ही ईश्वर है?

जीसस के अनुयायियों ने कब और क्यों जीसस को भगवान के रूप में मानना शुरू किया और इसका क्या कारण था। ऐसे कई सवाल अभी भी मिथकों में लिपटे पड़े हैं। कुछ लोग कहते हैं कि जीसस सिर्फ एक आदमी था जिसे उनकी मृत्यु के बाद भगवान बना दिया गया। जबकि बाइबल कहती है कि जीसस ईश्वर के पुत्र और स्वयं पूरी तरह से ईश्वर थे। हालाँकि ऐसा बाइबिल में करीब 2500 साल पहले लिखा गया था परन्तु अब कुछ जिज्ञासु लोग प्रश्न करते हैं कि भगवान कैसे एक आदमी बन गया या एक आदमी कैसे भगवान बन गया?

हम इस सवाल पर नहीं ठहरते कि क्या जीसस ईश्वर थे या वो ईश्वर के पुत्र। या फिर क्या जीसस वास्तव में मरने के बाद जिन्दा हुए थे और क्या वह मरे हुए लोगों को जिन्दा कर दिया करते थे। हम इन तमाम प्रश्नों को खुले छोड़ देते हैं। ये सब धार्मिक विश्वासों, आस्थाओं पर आधारित धार्मिक प्रश्न हैं। किन्तु हम एक इतिहासकार के रूप में यह जानने की कोशिश तो कर सकते हैं कि क्या वास्तव ऐसा ही था या कुछ और था?

असल में ये ठीक उसी समय की कहानी है जब रोमन जनता अपने सम्राटों को ईश्वर कहा करती थी। ये सच है कि जीसस एक अध्यात्मिक व्यक्ति थे कुछ लोग उनका अनुसरण भी करते थे। तो यह एक शाब्दिक दुर्घटना हो सकती है। जैसे भारत में ही सन 1830 में मृत्यु को प्राप्त हुए स्वामिनारायण उर्फ सहजानन्द स्वामी को सब अवतारों का अवतार घोषित कर भगवान बनाकर आज उनके नाम से अक्षरधाम मंदिर देश विदेश में खड़े कर दिए इसी तरह जीसस को भी सम्राट की उपाधि दे दी हो या फिर जीसस और वहां तत्कालीन सम्राटों के बीच एक प्रतियोगिता हो कि भगवान कौन? हालाँकि इस प्रतियोगिता में जीसस की हार हुई और दंड स्वरूप जीसस को सूली पर चढ़ा दिया गया।

.....जीसस यदि स्वयं के ईश्वर होने का दावा कर रहे थे तो सोचिए वह उन लोगों से कह रहे थे जो कबीलों और गुफाओं में रहते थे। बिखरा हुआ समाज था, लोग एक मत नहीं थे। जीसस की मृत्यु के बाद रोमन सम्राट ने इसका लाभ उठाया और रोम को ईसाई धर्म राज्य बना डाला यदि वह ऐसा नहीं करते तो रोम कभी भी प्रमुख धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक ताकत नहीं बन पाती। और यह सब इस दावे पर टिका था कि जीसस ही ईश्वर और ईश्वर के पुत्र थे।.....

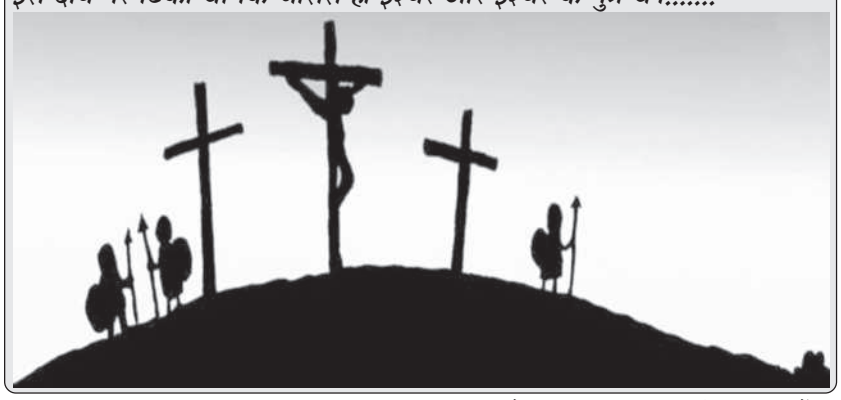

कहा जाता है मृत्यु के पश्चात जीसस को एक कब्र में रखा गया था और तीन दिन बाद जब कुछ महिलाएं वहां पहुंची तो उस कब्र को खाली पाया। इसके बाद उनके स्वर्ग में जाने की कहानियों का अविष्कार हुआ। लेकिन क्या सिर्फ खाली कब्र की वजह से लोग उनके ईश्वर होने पर विश्वास करने लगे? सोचिए आप किसी को कब्र में दफनाते हैं और उसके तीन दिन बाद आप वापस जाते हैं और शरीर कब्र में नहीं है, तो आपके मन में पहला विचार क्या आएगा! क्या किसी ने शरीर चुराया है? या किसी ने शरीर को स्थानांतरित कर दिया हो? ये आ सकता है कि अरे कहीं मैं गलत कब्र पर तो नहीं आ गया हूँ? या इन सबके विपरीत ये विचार आएगा कि वाह वह स्वर्ग में ले जाया गया है और ईश्वर का बेटा बन गया है?

हालाँकि ऐसे सब विचार लोगों की सोच और विवेक पर निर्भर करते हैं। किन्तु कब्र का खाली पाया जाना एक ऐतिहासिक सवाल है और स्वर्ग में जाना धार्मिक आस्था का और आस्था सवालों को ढक देती है। परन्तु इतिहास तो हमेशा नये सवाल कुरेदता है। इसलिए इतिहास कहता है खाली कब्र भ्रम पैदा कर सकती है, अगर भ्रम के बजाय विश्वास पैदा हो तो इसे आध्यात्मिकता की कमी समझी जाये।

बताया जाता है जीसस को सूली रोमन गवर्नर पोंटियस के आदेश पर हुई थी। एक अपराधी मानते हुए उन्हें यह सजा दी गयी थी तो जाहिर है उनका शव किसी तरह की आम कब्र में दफना दिया गया होगा! जीसस की मृत्यु के बाद कब्र से गायब होने की घटना की अफवाह रोमन साम्राज्य में फैलती गयी। लोगों ने अलग-अलग तरीकों से घटना का चमत्कारिक ढंग से उल्लेख किया कि रोम में जबरदस्त बदलाव आ गया। सम्राट कॉन्सटेंटाइन को धर्म की समझ कितनी थी कह नहीं सकते लेकिन राजनीति की समझ थी, विद्रोह का भय था अत: सम्राट कॉन्सटेंटाइन जनता के इस विचार के साथ खड़ा हो गया और जीसस को मरणोपरान्त अपने समकक्ष ईश्वर की उपाधि तक प्रदान कर दी।

यदि रोम का इतिहास देखा जाये तो उस समय का रोम आज की तरह शिक्षित नहीं था। जीसस यदि स्वयं के ईश्वर होने का दावा कर रहे थे तो सोचिए वह उन लोगों से कह रहे थे जो कबीलों और गुफाओं में रहते थे। बिखरा हुआ समाज था, लोग एक मत नहीं थे। जीसस की मृत्यु के बाद रोमन सम्राट ने इसका लाभ उठाया और रोम को ईसाई धर्म राज्य बना डाला यदि वह ऐसा नहीं करते तो रोम कभी भी प्रमुख धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक ताकत नहीं बन पाती और यह सब इस दावे पर टिका था कि जीसस ही ईश्वर और ईश्वर के पुत्र थे। यदि इसे धार्मिकता के आधार पर भी देखें तो जैसा कि घोषणा की गयी कि जीसस ईश्वर थे और वह ईश्वर के बेटे थे क्या इस हिसाब से ईश्वर दो नहीं हो गये? तो एक समय दो ईश्वर कैसे हो सकते हैं? क्योंकि एक ही समय में एक आदमी कहे कि वह ही ईश्वर है और वह ही ईश्वर का बेटा है तो दुविधा खड़ी हो जाती है। फिर तो ईश्वर की पत्नी भी होगी और ईश्वर की ससुराल भी, उसके माता पिता भी होंगे भाई बंधू भी तब क्या यह माना जाये कि इंसानों की तरह ईश्वर का भी अपना पूरा परिवार है?

- राजीव चौधरी

प्रेरक प्रसंग

पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु ने कहा

यह घटना भी सन् 1960 ई. के आसपास की है। पण्डित श्री ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु को काशी के निकट बड़ागाँव में विवाह-संस्कार करवाने जाना पड़ा। उन दिनों आप कुछ अस्वस्थ रहते थे। आने-जाने में कठिनाई होती थी, अत: आप आन्ध्र प्रदेश के अपने एक ब्रह्मचारी धर्मानन्दजी को साथ ले-गये।

आप विवाह-संस्कार प्रात:काल अथवा मध्याह्नोत्तर ही करवाया करते थे, परन्तु उस दिन विवाह-संस्कार रात्रि एक बजे करवाना पड़ा। कुछ वर्षा भी हो गई और साथ ही बड़ी भयंकर आँधी भी आ गई। बारात गाँव के बाहर एक वृक्ष के नीचे ठहरी। पूज्य जिज्ञासुजी को बड़ा कष्ट हुआ। शिष्य ने लौटते हुए कहा, ''गुरुजी आज तो आपको बड़ा कष्ट हुआ?''

पूज्य ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु ने कहा, बड़े-बड़ों के यहाँ तो सब लोग संस्कार करवाने पहुँच जाते हैं, साधारण लोगों के घर संस्कार करवाने कोई नहीं पहुँचता। यदि कोई बड़ा व्यक्ति इस समय मुझे संस्कार करवाने के लिए कहता तो इस समय मैं कदापि न आता, परन्तु यह व्यक्ति कचहरी में साधारण कर्मचारी है, आर्यपुरुष है। मेरे पास श्रद्धा से आया था, इसलिए विवाह करवाने की स्वीकृति दे दी।''

महापुरुषों के जीवन की यही विशेषता होती है। आर्यत्व का यही लक्षण है।

जो तड़प उठे जन पीड़ा से,
वह सच्चा मुनि मनस्वी है।
जो राख रमाकर आग तपे,
वह क्या खाक तपस्वी है।।

जिन धर्मवीरों ने गाँव-गाँव में जनसाधारण तक ऋषि का सन्देश सुनाया, वे सब ऐसी ही लग्न रखते थे।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार प्रकल्प के अन्तर्गत

देश-विदेश में वैदिक धर्म एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु प्रचारकों की आवश्यकता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की ओर से देश-विदेश में आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की शृंखला आरम्भ की जा रही है, जिसके लिए सुयोग्य उम्मीदवारों के आवेदन आमन्त्रित हैं। कुल पद : **भारत हेतु 20** तथा **विदेशों हेतु 5**। इच्छुक अभ्यर्थी के लिए वांछित योग्यताएं निम्न प्रकार हैं -

1. आर्य वीर दल का प्रशिक्षण प्राप्त हो। 2. गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ आधुनिक विषयों की भी शिक्षा प्राप्त की हो। 3 यज्ञ, भजन, प्रवचन के साथ-साथ सभी वैदिक संस्कार सम्पन्न कराने में निपुण हो। 4. आर्यसमाज के प्रचार की हार्दिक इच्छा रखता हो। 5. युवा जिनकी आयु 18 से 30 वर्ष के मध्य हो।

चयनित अभ्यर्थी की प्रथम नियुक्ति भारत के किसी भी राज्य में तथा विशिष्ट अंग्रेजी भाषा ज्ञान और कार्य के अनुभव के उपरान्त भारत से बाहर किसी भी देश में की जाएगी। पूर्ण योग्यता होने की दृष्टि में सीधे विदेशों में नियुक्ति की जा सकती है। सम्मानित मानदेय के साथ-साथ वाहन व्यय, मोबाईल व्यय, स्वास्थ्य बीमा, आवास की सुविधा प्रदान की जाएगी।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य साधने की दृढ़ इच्छा रखने वाले युवा महानुभाव अपना विस्तृत आवेदन पत्र- विश्व में आर्यसमाज के प्रचार की आवश्यकता और उनकी महान इच्छा, पारिवारिक स्थिति एवं परिचय, भाषा ज्ञान, कम्प्यूटर ज्ञान, शैक्षिक योग्यता, पासपोर्ट नं., मोबाईल एवं ईमेल के साथ तत्काल रूप से **'संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति'** के नाम - **'15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें।

- संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति

प्रथम पृष्ठ का शेष

विभिन्न शिक्षा केन्द्रों के विद्यार्थियों हेतु योग, चरित्र निर्माण ...

सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए 30 जून से 6 जुलाई तक 7 दिवसीय विशेष योग, चरित्र निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का विधिवत उद्घाटन् 30 जून को बोकाजान के विधायक श्री एन.मोमिन द्वारा किया गया। उद्घाटन के विशेष सत्र की अध्यक्षता संस्था के सचिव श्री लीला वोहरा जी ने की। ध्वजारोहण में उपस्थित महानुभावों में श्री परमेश्वर साहु जी, श्री पीकूदास जी तथा विजय शास्त्री जी आदि का क्षेत्रीय विधायक ने अभिनंदन किया। इस पूरे कार्यक्रम का संचालन दयानंद सेवाश्रम संघ, पूर्वोत्तर भारत के समन्वयक श्री संतोष शास्त्री जी ने किया।

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के महामंत्री श्री बृहस्पति आर्य जी, व्यायाम शिक्षक श्री दिनेश आर्य जी, श्री धर्मवीर आर्य जी, श्री धर्मवीर सिंह जी तथा व्यायाम शिक्षिकाएं कुमारी सृष्टि आर्या जी एवं कुमारी रजनी आर्या जी के कुशल निर्देशन में सभी शिविरार्थियों की दिनचर्या प्रात:काल 5 बजे से लेकर रात्रि शयन तक पहले से ही सुनिश्चित थी। प्रात: काल योगासन, व्यायाम, दंड बैठक, जुडो-कराटे, लाठी, भाला चलाने के प्रशिक्षण का विधिवत अभ्यास सभी आर्यवीर एवं आर्यवीरांगनाओं ने लगातार 7 दिनों तक किया। व्यायाम के उपरांत सभी को प्रतिदिन ब्रह्मयज्ञ एवं अग्निहोत्र का प्रशिक्षण दिया जाता था और उसके बाद बौद्धिक कक्षाओं में भी सभी शिविरार्थी सम्मिलित होते थे। बौद्धिक कक्षाओं में आर्यवीर एवं आर्यवीरांगनाओं को जहां एक तरफ वैदिक धर्म, संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों का प्रशिक्षण दिया जाता था वहीं दूसरी ओर उन्हें व्यवहारिक और सामाजिक बातें भी सिखाई जाती थी। राष्ट्र सेवा एवं आत्म रक्षा और चरित्र निर्माण की शिक्षाओं पर विशेष बल दिया गया।

दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित इस विशेष शिविर का भव्य समापन समारोह 6 जुलाई 2019 शनिवार को अत्यंत हर्षोल्लास के वातावरण में मनाया गया जिसमें दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी दिल्ली से पहुंचे और वहां उनका पूर्वोत्तर भारत के अधिकारियों द्वारा स्वागत सम्मान किया गया। आर्यवीर एवं आर्यवीरांगनाओं ने इस अवसर पर उत्कृष्ठ व्यायाम प्रदर्शन कर उपस्थित आर्यजनों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस व्यायाम प्रदर्शन में आर्यवीर एवं आर्य वीरांगनाओं के द्वारा स्तूप निर्माण, परेड मार्च, सर्वांग सुंदर व्यायाम, कठिन योगासन आदि प्रदर्शन विशेष रूप से प्रशंसनीय थे। सभी शिविरार्थियों को उत्कृष्ठ प्रदर्शन के लिए दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी ने प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया और सभी को शुभकामनाएं देते हुए जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सुपथ पर चलने का संदेश दिया।

शिविर में प्राप्त व्यायाम कलाओं का प्रदर्शन, यज्ञ प्रशिक्षण का क्रियात्मक प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले आदिवासी शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थी अधिकारियों के साथ

पूर्वोत्तर भारत के समन्वयक श्री संतोष शास्त्री जी ने आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के अधिकारी एवं व्यायाम शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं का धन्यवाद किया। श्री लीला वोहरा जी ने भी सबका धन्यवाद किया और इस तरह ये 7 दिवसीय पूर्वोत्तर राज्य का आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। - ***बृहस्पति आर्य, महामन्त्री***

वेद प्रचार मण्डल पश्चिमी दिल्ली द्वारा आयोजित सत्यार्थ प्रकाश उत्सव सोल्लास सम्पन्न

जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अवश्य पढ़ें - सत्यार्थ प्रकाश - धर्मपाल आर्य

7 जुलाई 2019, वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्र शाहाबाद मोहम्मदपुर के पंचायत भवन के प्रांगण में सत्यार्थ प्रकाश उत्सव का भव्य आयोजन किया गया जो कि अपने आपमें एक अद्भुत, प्रेरणादायक कार्यक्रम सिद्ध हुआ। इस अवसर पर पश्चिमी दिल्ली की लगभग समस्त आर्य समाजों के अधिकारी, सदस्य और कार्यकर्त्ताओं ने भाग लेकर लाभ प्राप्त किया। इस विशेष कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञ से हुआ। यज्ञ में उपस्थित आर्यजनों ने आहुति देकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस किया। इसके उपरांत मुख्य प्रवक्ता के रूप में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने अपने उद्बोधन में महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा रचित महान ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं से उपस्थित जनसमूह को अवगत कराते हुए कहा कि यह अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश मानव मात्र को उसके जीवन के लक्ष्य और उद्देश्य को प्राप्त करने का साहस प्रदान करता है। यह ग्रंथ एक कालजयी ग्रंथ है। जिसने भी इसका स्वाध्याय किया उसके जीवन में नवरूपांतरण संभव हुआ। इसके अनेक उदाहरण श्री आर्य जी ने प्रस्तुत किए और सभी को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने की प्रेरणा प्रदान की। इस अवसर पर आर्य जगत की सुप्रसिद्ध भजनोपदेशिका श्रीमती अंजलि आर्य जी करनाल से पधारी थी। उन्होंने ऋषि दयानंद की प्रेरणाओं पर आधारित सारगर्भित मधुर भजनों के द्वारा सबको भावविभोर कर दिया। इस अवसर पर गुरुकुल तिहाड़ के बच्चों एवं क्षेत्रीय आर्य विद्यालयों के बच्चों ने सत्यार्थ प्रकाश पर आधारित प्रेरक नाटिका प्रस्तुत की तथा आर्य वीरांगना दल की बालिकाओं ने सुंदर भजन प्रस्तुत किए।

सत्यार्थ प्रकाश उत्सव में क्षेत्रीय सांसद श्री रमेश विधूड़ी, विधायक श्री सतपाल राणा, निगम पार्षद श्रीमती सुषमा गोदारा जी सहित श्री सुरेन्द्र आर्य जी, श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता जी एवं वेद प्रचार मंडल के अधिकारी श्री बलदेव सचदेवा जी, श्री जगदीश मालिक, श्री नीरज आर्य, श्री धर्मेन्द्र जी, श्री धरमवीर आर्य जी कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्ण योगदान दिया। आर्य समाज शाहबाद मोहम्मदपुर की अधिकारी श्री जगराम जी, श्री मुकेश आर्य और श्री दिनेश सोलंकी एवं अन्य सदस्यों ने कार्यक्रम के आयोजन की पूर्ण व्यवस्था की। श्री वीरेन्द्र सरदाना जी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

- ***संयोजक***

वैचारिक क्रान्ति के लिए
महर्षि दयानन्दकृत
"सत्यार्थ प्रकाश"
पढ़ें और पढ़ावें

प्रथम पृष्ठ का शेष

राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभावान .....

परीक्षा ली गई। उन परीक्षार्थियों की परीक्षा का परिणाम निकालने के लिए सामूहिक वार्तालाप एवं साक्षात्कार आदि प्रक्रियाओं का भी प्रयोग किया गया। संपूर्ण परीक्षा के दौरान लगभग 47 छात्र-छात्राएं उत्तीर्ण हुए हैं। ये सभी विद्यार्थी भारत के भविष्य और विश्व की आशा बनकर देश का नाम रोशन करेंगे।

पूरे भारत से आए प्रतिभावान विद्यार्थियों को उनकी परीक्षा से पूर्व एक प्रेरणादायक कार्यक्रम में पदम्भूषण महाशय धर्मपाल जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री हरीश कालरा जी, श्री विनय आर्य जी, श्री सतीश चड्डा जी, श्री बलदेव सचदेवा जी, श्री सुरेन्द्र आर्य जी, श्री योगेश आर्य जी, श्री सुरिन्दर चौधरी जी, श्री विरेन्द्र सरदाना जी, श्री अशोक मेहतानी, श्री कर्नल मदान जी, श्री जितेन्द्र बनाती जी, श्री अजय भाटिया जी, श्री अजय कालरा जी, श्रीमती वीना आर्या जी, डॉ. उमाशशि दुर्गा जी, श्रीमती अनु वासुदेवा जी व अन्य गणमान्य आर्यजनों ने आशीर्वाद और शुभकामनाएं दी। इस संपूर्ण परीक्षा कार्यक्रम में श्री अनिल चुघ जी, श्रीमती सीमा भाटिया जी, श्रीमती कविता कालरा जी, श्रीमती उर्मिल गुप्ता जी, श्रीमती कुसुम आहूजा जी, श्रीमती माया तिवारी जी, श्रीमती स्नेहा जी, श्रीमती दीपिका भाटिया जी, श्रीमती पोइम डालिमा जी का योगदान प्रशंसनीय है।

विद्यार्थियों का साक्षात्कार लेने वाले सुयोग्य विद्वानों में डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार जी, श्री राजेन्द्र कुमार जी, श्री हरीश कालरा जी, श्री विनोद संदल जी, श्री आर.एस. तंवर जी, श्री जितेन्द्र गुप्ता जी, श्री राजीव तलवार जी, श्री समीर मलहोत्रा जी, श्री विनय आर्य जी, श्री सतीश चड्डा जी, श्री योगेश आर्य जी, श्री विरेन्द्र सरदाना जी, श्री कर्नल मदान, श्री जितेन्द्र बनाती जी का योगदान अविस्मरणीय है।

महाशय धर्मपाल जी ने सभी कार्य कर्ताओं और अधिकारियों का उत्साहवर्धन करते हुए सभी विद्यार्थियों को उनका ध्येय बताते हुए कहा कि आपका कार्य केवल जीविका चलाना नहीं है बल्कि अपने देश की संस्कृति और सभ्यता और संस्कारों का संरक्षण भी आपको करना है एवं आपको देश और धर्म का नाम रोशन करना है।

इस आर्य समाज के द्वारा इस अनुपम और अद्भुत सेवा कार्य के लिए आओ, हम सभी प्रार्थना करें कि हे ईश्वर, ये सभी प्रतिभावान छात्र महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभावान संस्थान के माध्यम से इस संस्थान का जो मिशन और विजन है उसको पूरा करें। आर्य समाज का, देश का नाम रोशन करें और एक दिन सभी राष्ट्र की सेवा करते हुए एक नया कीर्तिमान स्थापित करें।

(ऊपर) लिखित परीक्षा देने के लिए पधारते प्रतिभागी। (नीचे) विषय विशेष पर ग्रुप डिस्कशन एवं साक्षात्कार के माध्यम से प्रतिभागियों के चयन की प्रक्रिया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने किया आर्य समाज की ओर से लोकसभा अध्यक्ष का अभिनन्दन

आर्य समाज एक आदर्श संस्था है - श्री ओम बिरला

दिल्ली, 5 जुलाई। नवनिर्वाचित लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी से शिष्टाचार भेंट करने के लिए दिल्ली में उनके निवास पर श्री विनय आर्य, महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में सभा उपप्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य व श्री शिवकुमार मदान, श्री सुरेंद्र प्रकाश आर्य व श्री जोगेंद्र खट्टर महामंत्री दयानंद सेवाश्रम संघ, श्री व्रतपाल भगत जी, कोषाध्यक्ष, श्री बलदेव सचदेवा जी, उत्तर पश्चिमी वेद प्रचार मंडल, श्रीमती कविता आर्या जी, प्रधाना, श्री सतीश चड्डा जी, आर्य केंद्रीय सभा के महामंत्री, श्री राजेंद्र पाल आर्य जी व श्री अजीत वर्मा जी, उपप्रधान आर्य समाज कीर्ति नगर, श्री जयपाल गर्ग जी, प्रधान, श्री सूर्यभान डागर जी, उपप्रधान, श्री रमेश चंद्र जी, मंत्री व अन्य पदाधिकारी आर्य समाज जनकपुरी, श्री राकेश आर्य जी, मंत्री आर्य समाज सुदर्शन पार्क, श्रीमती सुमेधा आचार्या जी व कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणीयां अखिल भारत दयानंद सेवाश्रम संघ रानीबाग व अन्य आर्य गणमान्य सदस्य सामूहिक रूप से गए।

गायत्री मंत्र व स्वस्तिवाचन के मंत्रों के उच्चारण से श्री ओम बिरला जी का अभिनंदन किया। श्री बिरला जी को शुभकामनाओं के साथ-साथ पीतवस्त्र पहनाकर, ओ३म् का स्मृति चिह्न तथा वैदिक साहित्य प्रदान किया गया। इस अवसर पर लोकसभा अध्यक्ष श्री बिरला जी ने कहा कि आर्य समाज एक आदर्श संगठन है। दिल्ली में आर्य समाज के विशाल भवन देखकर मन को प्रसन्नता हुई । मैं शीघ्र ही किसी-न-किसी आर्य समाज में यज्ञ, प्रवचन एवं सत्संग में उपस्थित होऊंगा तथा होता रहूंगा। उन्होंने सभी आर्य सदस्यों को धन्यवाद दिया।

- सतीश चड्डा, महामन्त्री

लोक सभा के माननीय अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी को सम्मानित करते हुए सर्वश्री ओम प्रकाश आर्य, शिव कुमार मदान, सतीश चड्डा, रविदेव गुप्ता, विनय आर्य , जोगेंद्र खट्टर एवं अन्य महानुभाव। इस अवसर पर आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार की छात्राओं ने स्वस्तिवाचन के मन्त्रों का किया पाठ।

War and Peace in VEDAS

- Brigadier Chitranjan Sawant

Continue From Last issue

The third mantra, 39th sukta in the first mandala of the Rigveda exhorts those who are in the profession of arms not to let the grass grow under their feet. They should always be mobile in all directions across hills and dales to pursue the goal without fear. It would be pertinent to add that the military movement is undertaken all the year round and superstitions, like the one about proceeding in any one direction on a given day may be hazardous, are left by the wayside.

Courage, fortitude, forbearance of a warrior are his assets that he can ill-afford to squander at the mythical altar created by ill-informed and semi-literate men of religion of the dark medieval ages.

The Rigveda mantra in the ninth mandala describes a lovely scenario of our army marching to give battle to the enemy. It is a heartening commentary on the leader and the led. The commander is in the forward most Ratha or the battle wagon, others follow him with implicit faith. The rank and file of soldiers are mightily pleased in their hearts: **Pra Senanih Shuro Agre Rathanam Gavyanneti Harshate Asya Sena.** *9-96-1.*

With morale of our forces remaining sky high, victory in battle over the enemy is a foregone conclusion. Indeed, high morale is a battle winning factor and a unique one. The leaders, both at the national level and the armed forces level, have to take every possible step to ensure that the morale of the nation and the armed forces always remains sky high. The Nation has to rise as One Man and maintain cohesion.

LET US BECOME INVINCIBLE

Mind is the man. With a view to becoming invincible, the entire country has to work for it relentlessly. Let us start with physical fitness. A healthy mind is a part of a healthy body. So, let us care for the body, irrespective of the teaching that an individual's identity rests in his soul and not in the body. Embodied soul is the answer to remain fit like a fiddle. What makes a fighting man and a woman develop nerves of steel is moral courage. Where does a soldier get moral courage from? Dharma provides moral courage to man. No wonder all efficient armies of the world give teachings and practice of Dharma a prominent place in the training schedule.

Negligence in its implementation leads the army on the path of disaster. No sane outfit wants to walk on a suicidal course. Let the rank and file become convinced of the cause they are fighting for and then they will give their best in battle. Such soldiers are focussed men and women who always strive to achieve the aim and get the goal. Nothing can stop them from achieving the goal, come rain come shine.

The Rigveda extols virtues of such enlightened soldiers as described heretofore. The third mantra in 41st sukta of the first mandala runs thus :

Vi Durga Vi Dwishah Puro Ghnanti Rajaan Aisham Nayanti Durita Sirah

An enlightened and brave soldier, a Vir Kshatriya, is one who punishes enemies of the nation, destroys their fortresses, dismantles their built-up defenses and razes to ground their cities and shelters and finally exterminates them so that they do not raise their heads in revolt. Thus the aim of a well- trained army, navy and air force is to annihilate completely all enemies of the nation. Indeed, it is a clear and unambiguous Vedic mandate for taking punitive action against the enemy, internal and external, and carry the operation to its logical end. Terrorists are no exception to the rule enunciated by this Ved mantra.

Modernisation of armaments and keeping strategy and field tactics in tune with demand of the day have to be catered for in making an armed force invincible. History bears witness to defeat of inward looking nations at the hands of forward looking nations. A frog-in the-well tendency must be discouraged. Interaction with other nations of the world is a sine-qua-non of keeping abreast with new researches in the weapon system and art of war. Stagnation of all sorts must be banished from the lifestyle of a nation. Those who shun information technology cannot stay afloat for long. They will sink sooner than later. To stay afloat one must continue swimming, even if it is against the current at times. To stay afloat a nation has to keep on kicking. So be it.

PROMOTING PEACE

Notwithstanding what has been said heretofore about waging a war, annihilating the enemy and exterminating him, the main mission of Man is Peace. It has already been emphasized that going to war is the last resort of the state policy. Disputes between two nations are to be solved through diplomacy and taking recourse to violence should be eschewed. However, more often than not, the rule of international law is thrown overboard. Might is Right – that is the law of jungle but prevails in the so- called civilized world. The injunction of the Vedas is to eschew war.

War is indeed destructive. Mankind has suffered in wars. Nevertheless, when the very life and way of life are at stake, war is permissible in self-defense. If demon like men and women are bent upon destroying our way of life, we cannot but go to war against them. Here one is waging war to promote Peace. Thus the ultimate goal is Peace, even if it has to be achieved through war.

The Yajurved in its 36th chapter,17th mantra talks of Peace in a very persuasive style. Peace is good for the mankind and man should pray for Peace that prevails all over the divine creation.

The mantra is commonly called Shanti Path. The recitation of the mantra guides us, human beings, to perfect peace. This mantra is environment-friendly as well as ecology-friendly. The mantra mentions the shiny celestial entities, talks of planet earth, of water, of medicinal herbs, green foliage, the divine knowledge and the Peace that pervades all over the Creation. Finally, Man prays for the same all-pervading Peace to be a part and parcel of his own self. Let there be Peace, Peace and Peace. Pray. When Man reposes unflinching faith in Peace, he will indeed abhor War.

NA DAINYAM NA PALAYANAM

May I sum up by saying that Yogeshwar Shri Krishna exhorted Mankind through Arjuna that one should never show weakness of body, mind and spirit, nor run away from the battlefield once the conch shell declaring war is blown. Spiritual Robustness gives a Kshatriya moral courage to face any enemy anywhere, fight to finish and win the war. It is our Dharma to engage the enemy in battle and defeat him to uphold the Rule of Law enshrined in our Vedic Dharma.

- sawantchitranjan@yahoo.com
Mob:9811173590

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतर्गत तीन बड़े प्रकल्पों का विस्तार एवं योजनाओं का शुभारम्भ

मध्य प्रदेश में कन्या गुरुकुल, वानप्रस्थ आश्रम, स्थायी आर्य वीर दल प्रशिक्षण केन्द्र एवं गौशाला का विस्तार

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत शाजापुर, आगरा क्षेत्र वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से सक्रिय क्षेत्र हैं। यहां बड़ी संख्या में ग्रामों में आर्य वीर दल का कार्य फैला हुआ है। यह क्षेत्र उज्जैन संभाग के अंतर्गत आता है। इसी क्षेत्र में टिगरिया ग्राम में दान से प्राप्त प्रांतीय सभा की लगभग 50 बीघा भूमि है। इसका उपयोग अब एक गौशाला के लिए किया जा रहा है, वर्तमान में 180 से अधिक गौधन वहां है।

इसी स्थान के पास दान में 3 बीघा भूमि मुख्य मार्ग, सड़क के नजदीक जो करोड़ों की मूल्य की है सभा को प्राप्त हुई है। इस भूमि पर कन्या गुरुकुल बनाने की योजना बनी, सर्वप्रथम इसके संचालन व मार्गदर्शन के लिए विभिन्न गुरुकुलों की आचार्या, अधिष्ठात्री बहनों से चर्चा की। सौभाग्य से वाराणसी पाणिनी महाविद्यालय का मार्गदर्शन व संरक्षण प्राप्त हुआ। डॉ. नन्दिताजी ने सहयोग हेतु पूर्ण आश्वस्त किया। गुरुकुल भवन निर्माण का कार्य प्रारंभ हुआ, स्थानीय और प्रान्त की आर्य समाजों से सहयोग प्राप्त होने लगा, निर्माण कार्य प्रारंभ हो गया। लगभग डेढ़ से दो करोड़ की लागत से गुरुकुल भवन व परिसर का निर्माण होगा। गुरुकुल के साथ मध्य प्रदेश शिक्षा मण्डल भोपाल के पाठ्यक्रम से भी कक्षायें प्रारंभ की जावेंगीं। इस हेतु तल मंजिल का निर्माण पूर्ण हो चुका है। दिनांक 8 जुलाई से विद्यालय प्रारंभ हो रहा है।

गुरुकुल में छात्राओं व आचार्याओं तथा कर्मचारी निवास कार्य प्रारंभ हो चुका है। अगस्त प्रथम सप्ताह तक आवासीय व्यवस्था पूर्ण होकर गुरुकुल प्रारंभ किया जावेगा। गुरुकुल के लिए क्षेत्र में अभूतपूर्व उत्साह है, दान के रूप में छोटी-छोटी राशि देने वालों की बड़ी सख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है।

इसके साथ ही वानप्रस्थ आश्रम की भी योजना बन रही है। वैदिक धर्म के लिए समर्पित, समय दानी और सहयोगी विद्वान, प्रचारक, वानप्रस्थी, संन्यासीगणों के स्थायी निवास व उपयोगी आवश्यक सामग्री मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा निशुलक व्यवस्था करने की योजना है।

इसी स्थान पर योग साधना केंद्र प्रारंभ करने का भी प्रस्ताव भी प्राप्त हुआ है। सभा इस पर भी विचारकर शीघ्र निर्णय लेगी। प्रांतीय सभा निरंतर अपने कार्यों का विस्तार कर रही है, विगत 5 वर्षों में 40 से अधिक नवीन आर्य समाजों की स्थापना हो चुकी है, अभी भी यह क्रम जारी है। मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के सक्रिय, निष्ठावान पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं के प्रयास व निष्काम पुरुषार्थ का परिणाम है।

- प्रकाश आर्य, सभामंत्री

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

आओ, हम भी करें 'सहयोग' का सहयोग, यही है सच्चा, अच्छा योग

"सहयोग" सेवा यज्ञ हमारा
जरूरतमंदों को मिला सहारा
आओ, हाथ बढ़ाएं- सहयोगी बन जाएं

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित सहयोग एक ऐसी कल्याणकारी दिव्य योजना है, जिससे लाखों लोग लगातार लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

सहयोग : क्या है योजना?

सहयोग एक चार अक्षरों का छोटा-सा शब्द है, लेकिन इसकी महिमा अपरमपार है। सहयोग के माध्यम से शहरों, नगरों से दूर आदिवासी क्षेत्रों में अभावग्रस्त मनुष्यों की सेवा सहायता का एक महान अभियान गतिशील है। यह सर्वविदित है कि अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा मानव सेवा के कई विशेष कार्य काफी लंबे समय से चल रहे हैं। इन सेवाकार्यों को गति देते हुए संघ के अधिकारियों ने आदिवासी क्षेत्रों में ईश्वर की अमृत संतान मनुष्यों को बड़ी तंगहाली और बदहाली में करीब से व्यथित जीवन जीते देखा तो ज्ञात हुआ कि विश्व की छटी अर्थव्यवस्था के रूप में विख्यात भारत में आज भी लोग अपनी मूलभूत जरूरतों से महरूम हैं। तन ढांपने के लिए वस्त्र और जूते, चप्पल आदि की जरूरतें भी लोगों को रुला रही हैं। यह देखकर आर्य नेताओं को ऋषि दयानंद के महान जीवन से जुड़ी घटना याद आ गई कि किस तरह एक निर्धन मां ने अपने बच्चे के मृत शरीर से कफन को उतार कर उसे नग्न ही जल में प्रवाहित कर दिया था। इस मार्मिक घटना से ऋषि का कोमल हृदय द्रवित हो उठा और उन्होंने अपने शरीर पर वस्त्र धारण करना ही बंद कर दिया। ऋषि दयानंद के अनुयायी आर्यजनों ने महान कर्मयोगी महाशय धर्मपाल जी से आदिवासी बंधुओं की इस पीड़ा के विषय में विचार विमर्श कर आदिवासी क्षेत्रों में या अन्य किसी भी स्थान पर जरूरतमंदों की पहचान कर उन्हें पुराने किंतु उपयोगी वस्त्र जूते, चप्पल, पुस्तकें, खिलौने, स्टेशनरी आदि समानों को उन तक पहुंचाने के लिए **"सहयोग"** नामक योजना का शुभारंभ किया। जो कि आज तीव्र गति से जरूरतमंद छात्रों, युवाओं और वृद्धजनों को लगातार सहयोग प्रदान कर रहा है।

कैसे बनें "सहयोग" के सदस्य?

⋆ सहयोग में सहभागिता के लिए पहला बिंदु है कि आप जिन वस्त्रों का प्रयोग नहीं करते, उन उपयोगी वस्त्रों को स्वच्छ करके, प्रेस कराके, पैकट में रखकर अपनी नजदीकी आर्यसमाज अथवा सहयोग के सेंटर पर पहुंचाएं ।

⋆ इसी तरह से आप जिन जूते, चप्पलों का प्रयोग नहीं करते वे दूसरों के काम आने लायक हों तो उन्हें पोलिश कराके उन्हें भी पैकट में रखें और वस्त्रों की तरह सहयोग के लिए सेंटर पर भेजें।

⋆ इस क्रम में आप खिलौने, पुस्तक, कॉपी, पैन, पेंसिल आदि उपयोगी वस्तुएं भी विधिवत जैसे किसी को गिफ्ट दिया जाता है वैसे ही पैक करके सहयोग के सहयोगी बनें।

इस सारे समान को सहयोग स्वयं अपनी गाड़ी द्वारा प्राप्त कर लेगा और आप सहयोग के अनन्य सहयोगी सदस्य बन जाएंगे।

निवेदन :- आधुनिक परिवेश में आर्यजनों को ऐसी विभिन्न सेवा योजनाओं को क्रियान्वित करना ही होगा, क्योंकि मानवता आर्य समाज को पुकार रही है, अन्य अनेक तथाकथित दिखावटी, बनावटी संस्थाएं सेवा के नाम पर बढ़ चढ़कर ढोंग कर रही हैं, लोभ-लालच में भोले-भाले निर्धन लोगों कों विधर्मी बनाने पर तुली हुई हैं। अत: हमें अपने कर्तव्यों को समझना होगा और आर्य समाज की और से निरंतर सृजनात्मक कार्यो को गति देनी होगी। इसलिए आप दिल्ली अथवा एन सी आर में जहां भी रहते हैं वहीं अपने आर्य समाज में, आर्य शिक्षण संस्थान में या अपने गली-मोहल्ले में सहयोग का सेंटर बनाएं और इस अनुपम सेवा को वृहद अभियान का रूप देने में सहयोगी बनें दें।

आओ, करें सहयोग, शुभ कर्मो का योग

अधिक जानकारी प्राप्त करने, सहयोग से जुड़ने के लिए अथवा आप द्वारा एकत्र किया गया सहयोग जरुरतमंदों तक पहुंचाने के लिए मो. नं. 9540050322 पर सम्पर्क। - ***व्यवस्थापक***

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज पंखा रोड

सी-ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली-58

प्रधान : श्री जयपाल गर्ग
मन्त्री : श्री रमेश चन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री भूपसिंह सैनी

भूल सुधार

आर्यसन्देश साप्ताहिक के गत अंक 1 जुलाई से 7 जुलाई, 2019 में पृष्ठ 7 पर प्रकाशित निर्वाचन समाचार के अन्तर्गत आर्यसमाज सुन्दर विहार के मन्त्री का नाम भक्तनाथ बतरा तथा कोषाध्यक्ष का नाम श्री संजीव आर्य प्रकाशित हो गया था। कृपया इस सूचना को सुधारकर निम्न प्रकार पढ़ा जाए।

आर्यसमाज सुन्दर विहार, दिल्ली-87

प्रधान : श्री कंवरभान खेत्रपाल
मन्त्री : श्री अमरनाथ बत्रा
कोषाध्यक्ष : श्री प्रहलाद सिंह

पाठकों को हुई असुविधा के लिए सम्पादक मंडल खेद है। - ***सम्पादक***

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है।

वार्षिक शुल्क 250/- रुपये तथा **आजीवन शुल्क** (मात्र दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें।

- ***सम्पादक***

वधू चाहिए

आर्य परिवार, संस्कारित, जन्मतिथि 12/01/1992, कद - 5 फुट 5 इंच, शिक्षा - B.Tech. (Com. Sc.) NIT Raipur से, Multinational Company में अच्छी पोस्ट पर कार्यरत, प्रतिष्ठित परिवार के युवक हेतु आर्य परिवार की सुशिक्षित एवं संस्कारवान युवती चाहिए। सम्पर्क करें-

9412865775, 9412135060

शोक समाचार

श्रीमती कुसुमलता गोयल का निधन

लोकतन्त्र सेनानी स्व. श्री राजेन्द्र प्रसाद गोयल जी की धर्मपत्नी एवं श्री देवेन्द्र कुमार गोयल जी की माताजी श्रीमती कुसुमलता गोयल जी का 7 जुलाई को निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 11 जुलाई, 2019 को सुमंगल उत्सव मंडप अमरोहा में सम्पन्न हुई, जिसमें जिले की आर्य संस्थाओं के अधिकारियों ने पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा

समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 8 जुलाई, 2019 से रविवार 14 जुलाई, 2019

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 11-12 जुलाई, 2019

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 10 जुलाई, 2019

मानव समाज के ऊपर ऋषि दयानन्द के उपकार हैं अनुकरणीय - श्री कैलाश सत्यार्थी, नोबेल शांति पुरस्कार विजेता

4 जून 2019 को विश्वविख्यात नोबेल शांति पुरस्कार विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी जी से श्री अर्जुन देव चड्डा जी के नेतृत्व में श्री सतीश चड्डा जी, महामंत्री आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य, श्री सूरत सिंह जी, श्री वेदमित्र वैदिक जी,कोटा राजस्थान, श्री किशन आर्य जी, श्री सत्यप्रकाश जी, श्री सुनील कुमार जी, हरियाणा, श्री अमित शर्मा जी व श्री प्रताप जी, महाशय धर्मपाल मीडिया सेंटर से उनके निवास पर मिलने हेतु पहुंचे। श्री सत्यार्थी जी ने बड़ा ही प्रेम-सौहार्द पूर्ण भाव से सम्मान किया और महर्षि दयानंद तथा आर्य समाज के विषय में उन्होंने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने लगभग 150 पूर्व जो समाज सुधार का कार्य किया वह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। आज भी आर्य समाज ऋषि के दिखाए रास्ते पर निरंतर गतिशील है। आर्य समाज एक ऐसा संगठन है जहां राष्ट्र एवं मानव सेवा को एक आंदोलन के रूप में चलाया जा रहा है। महर्षि दयानंद के वैदिक विचार और सिद्धांतों के अनुरूप कई कानून भी बन गए हैं, वर्तमान में महर्षि की शिक्षाओं का और गहराई से प्रचार प्रसार और अध्ययन किए जाने की आवश्यकता है। जिससे समाज, देश और दुनिया की उन्नति और प्रगति हो। - ***सतीश चड्डा, महामन्त्री***

प्रतिष्ठा में,

शुद्ध तांबे से निर्मित
वैदिक यज्ञ कुण्ड एवं यज्ञ पात्र

प्राप्ति स्थान:-
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें मो. 09540040339

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/-रु
ब्रेल लिपि में
सत्यार्थ प्रकाश
मात्र 2000/-रु
अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयों को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित
महर्षि दयानन्दकृत
सत्यार्थ प्रकाश
उर्दू भाषा में अनुवाद)

मूल्य मात्र 100/- रुपये
श्री बलदेव राज महाजन जी
(आर्यसमाज आर्यनगर, पटपड़गंज)
के विशेष सहयोग से
केवल मात्र 70/- में
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें -
दिल्ली आर्य प्र. सभा, मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह